# चिम्पैंज़ी मृतक का शोक मनाते हैं

**चि**म्पैंज़ी के व्यवहार को देखकर जीव वैज्ञानिकों और मनोवैज्ञानिकों का निष्कर्ष है कि ये प्राणी न सिर्फ मौत का अर्थ समझते हैं, वरन मौत के सदमे से निपटने के तरीके भी अपनाते हैं। इसका सबसे पहला अवलोकन दक्षिण-पूर्वी गिनी में 2003 में किया गया था। दो चिम्पैंज़ी शिशु फ्लू की वजह से मौत के शिकार हो गए थे। इनकी मां कई हफ्तों तक इन्हें उठाए घूमती रही थी। मगर इसके आधार पर यह तो नहीं कहा जा सकता था कि वह मां जानती थी कि ये शिशु मर चुके हैं।

हाल ही में यू.के. के एडवेंचर पार्क में किए गए कुछ अवलोकनों ने ज़रूर इस बात का प्रमाण दिया है कि चिम्पैंज़ी मौत को समझते हैं। वहां एक 50-वर्षीय चिम्पैंज़ी की मृत्यु हो गई थी। उसकी बेटी रात भर उसके पास ही बैठी रही थी। बाद में झुंड के सदस्यों ने लाश को ठिकाने लगाया मगर काफी दिनों तक वे उस जगह से बचकर निकलते थे जहां मृत्यु हुई थी।

स्टर्लिंग विश्वविद्यालय के मनोवैज्ञानिक जेम्स एंडरसन का मत है कि इससे पता चलता है कि चिम्पैंज़ी में मृत्यु सम्बंधी संस्कार के चिन्ह हैं। वैसे उनका अनुभव है कि उनका व्यवहार अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग होता है।

जैसे गिनी की घटना दर्शाती है कि शिशु की मृत्यु के बाद कुछ समय तक उससे संपर्क बनाए रखना एक तरीका हो सकता है जिसकी मदद से चिम्पैंज़ी मनोवैज्ञानिक रूप से मौत से तालमेल बनाते हैं। अन्य प्राइमेट्स भी अपने मृत शिशुओं को कुछ समय तक साथ ही रखते हैं मगर कुछेक दिन ही। यह भी देखा गया कि मां उनकी लाश के साथ ऐसे व्यवहार करती है, मानो वह ज़िन्दा हो मगर बीच-बीच में उसके व्यवहार से लगता है कि वह जानती है कि शिशु की मृत्यु हो चुकी है।

एंडरसन का मत है कि उपरोक्त अवलोकन स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि चिम्पैंज़ी में मृत्यु की धारणा मौजूद है और इसके सदमे से निपटने के तरीके भी हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***